जनजातीय चेतना, कला, साहित्य, संस्कृति एवं समाचार का राष्ट्रीय मासिक

ककसाड़

वर्ष 11 अंक 103
अक्तूबर, 2024
मूल्य : 25/- रुपए

ISSN 2456-2211

दिल्ली से प्रकाशित

ककसाड़

(जनजातीय चेतना, कला, साहित्य, संस्कृति एवं समाचार का राष्ट्रीय मासिक)

अक्तूबर 2024 **वर्ष-11 • अंक-103**

संस्थापना वर्ष 2015

प्रबंध एवं परामर्श संपादक
कुसुमलता सिंह

संपादक
डॉ. राजाराम त्रिपाठी

कानूनी सलाहकार
फैसल रिजवी, अपूर्वा त्रिपाठी

•

ग्राफिक डिजाईन
रोहित आनंद (लिटिल बर्ड)

• मुख्य कार्यालय एवं रचनाएँ भेजने का पता •

सी-54 रिट्रीट अपार्टमेंट, 20-आई.पी. एक्सटेंशन, पटपड़गंज, दिल्ली-110092

फोनः 9968288050, 011-22728461

•

• संपादकीय कार्यालय •

151, डी.एन.के. हर्बल इस्टेट, कोण्डागाँव, छ.ग.-494226

फोनः 9425258105, 07786-242506

ई-मेल : kaksaadeditor@gmail.com
kaksaadoffice@gmail.com

वेबसाइट : www.kaksad.com

मूल्य : **रु. 25** (एक प्रति), वार्षिक : **रु. 350/-** संस्था और पुस्तकालयों के लिए वार्षिक : **रु. 500/-** वार्षिक (विदेश) : **$110** यू.एस. आजीवन व्यक्तिगत : **रु. 3000/-** संस्था : **रु. 5000/-**

संपादन-संचालन पूर्णतः अवैतनिक एवं अव्यवसायिक

दिल्ली से प्रकाशित होने वाली 'ककसाड़' पत्रिका में प्रकाशित लेखकों के विचार उनके अपने हैं जिनसे संपादकीय सहमति अनिवार्य नहीं।

• ककसाड़ से संबंधित सभी विवादास्पद मामले केवल दिल्ली न्यायालय के अधीन होंगे • **कुसुमलता सिंह** स्वामी, मुद्रक एवं प्रकाशक।

अनुक्रम

दिल्ली लाइब्रेरी बोर्ड (संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार) द्वारा पुरस्कृत

4. **संपादकीय**

साक्षात्कार

6. संकीर्णता को तोड़ता है लोकसाहित्य और इतिहास का अंतर्संबंध (**डॉ. नरेन्द्र नारायण सिंह 'निराला'** से साहित्यकार **अश्विनीकुमार आलोक** की बातचीत)

लेख

8. गोंड समुदाय की लोक कथाएँ : **हरि राम मीणा**

14. खेल और राष्ट्रीयता : **रुद्रांशु मुखर्जी**

19. भारतीय संस्कृतिः नृत्य कला, मूर्ति कला और साहित्य : **कुसुमलता सिंह**

21. बंगाल का चैतन्य संप्रदाय : **डॉ. रामचन्द्र राय**

24. आज के आदिवासी : **शैलेन्द्र चौहान**

26. आदिवासियों के आस्था और विश्वास का पर्व 'करमा' : **अखिलेश कुमार मौर्य**

30. हरेली : माटी के तिहार : **डॉ. प्रकाश पतंगीवार**

कहानी

33. दुतिया की चुनौती : **अनामिका प्रिया**

35. दायित्व बोध : **शोभनाथ शुक्ल**

कविता/ग़ज़ल

38. चंद्रेश्वर 38. विमल किशोर 39. विजय सिंह

40. केशव शरण 41. धमेंद्र गुप्त 'साहिल'

लघुकथा

48. वर्षा की गवाही और पूर्वजन्म के कर्म

पुस्तक समीक्षा

43. चुनी हुई कविताएँ : **डॉ. शकुंतला कालरा**

44. रंग बदलती जिंदगी : **रविशंकर शुक्ल**

46. हो न हो : **मनोज अबोध**

10. **कहावतें**

13. **क्या है ककसाड़?**

42. **यादें**

49. **साहित्यिक समाचार**

आवरण कलाकृति - सुभाष सिंह व्याम

(गोंड कलाकार) - भोपाल (म.प्र.) **मो.** 94256-76914

लकड़ी के टुकड़े जोड़कर कैनवस पर गोंडी भित्ति शैली में पेंटिंग बनाते है।

संपादकीय

हमें आपसे यह बात साझा करते हुए बड़ी खुशी हो रही है कि, इस समय आपके हाथों में ककसाड़ का जो अंक है, उस अंक के साथ ही यह पत्रिका अपने 11वें वर्ष में प्रवेश कर रही है। दस साल यानी एक समूचा दशक, जीवन से आहिस्ता-आहिस्ता कब सरक गया पता ही न चला! दस साल, यह सिर्फ समय का माप नहीं है, बल्कि एक जुनून की यात्रा के साथ ही जनजातीय समुदायों की गहराइयों में समाहित अद्‌भुत सांस्कृतिक मूल्यों, परंपरागत ज्ञान, बोली, भाषा, रीति-रिवाजों, लोकगीतों, कहावतों और जीवन-दर्शन की खोज तथा सहेजने, समेटने व दस्तावेजीकरण की निरंतर साधना भी है। यह एक मासिक पत्रिका का दस सालों का निरंतर बिना चूके प्रकाशन यात्रा मात्र नहीं है, बल्कि इसके मार्ग में आने वाली उन अनगिनत कठिनाइयों की भी गाथा है, और साथ ही उन कितनी ही कही-अनकही कहानियों और जीवन पद्धति का दस्तावेज है, जो पीढ़ियों से जल, जंगल और जमीन के साथ सह-अस्तित्व का मार्ग प्रशस्त करती आ रही हैं। यह पत्रिका जनजातीय समाज के उस अनमोल ज्ञान को बचाने का एक ईमानदार प्रयत्न है, जो आज की बाजारवादी और संसाधनों का अंधाधुंध दोहन करने वाली दुनिया के बीच एक शांति का संदेश देता है।

जनजातीय समाज ने हमें सिखाया है कि असली विकास वही है, जिसमें प्रकृति के साथ सहजीविता हो। यह वह विकास नहीं है जो वनों को काटकर, नदियों को सुखाकर, धरती की कोख में साल दर साल जहर उलीच कर, आकाश को जहरीले धुँआ-धूल से ढँककर हो रहा है, बल्कि वह है जो प्रकृति के साथ तादात्म्य में रहकर संतुलन बनाए रखता है। उनका जीवनदर्शन **गांधीजी** के उस अमर वाक्य की प्रतिध्वनि है–

"प्रकृति में सबकी जरूरतें पूरी करने के लिए पर्याप्त संसाधन है, परंतु वह किसी के लालच को पूरा नहीं कर सकती।"

आधुनिक सभ्यता, जो प्रगति के नाम पर विनाश के बीज बो रही है, उससे भिन्न जनजातीय समाज अपने ज्ञान और अनुभव से हमें दिखा रहा है कि हमें किस दिशा में जाना चाहिए।

आपकी इस पत्रिका का उद्देश्य केवल जनजातीय कलाओं और परंपराओं को संरक्षित करना मात्र नहीं है, बल्कि इस ज्ञान को आधुनिक समाज के साथ संवाद स्थापित करना है। हम उस संतुलन की खोज कर रहे हैं जहाँ प्राचीनता और आधुनिकता हाथ मिलाकर एक नई दिशा का निर्माण कर सकें। ककसाड़ न केवल इन विलुप्तप्राय धरोहरों को उजागर कर रहा है, बल्कि यह एक सेतु का काम भी कर रहा है जो इन मूल्यों और तथाकथित सभ्यता के बीच संवाद स्थापित करता है। यह केवल एक पत्रिका नहीं, बल्कि वह आधारशिला है जो हमारे समय की सबसे महत्वपूर्ण चुनौतियों से निपटने के लिए मार्गदर्शन प्रदान करती है।

जैसा कि **प्रसिद्ध दार्शनिक और पर्यावरणविद् एडवर्ड एब्बी** ने कहा था,

"आधुनिक मनुष्य का सबसे बड़ा भ्रम यह है कि वह प्रकृति से ऊपर है।"

यह भ्रम, जो आज की सभ्यता को पूर्णतः ध्वस्त करने की कगार पर है, जनजातीय समाज के जीवन-दर्शन में कहीं नहीं मिलता। उनके लिए प्रकृति सिर्फ संसाधन नहीं, बल्कि जीवन का मूल स्रोत है। उनका दृष्टिकोण स्पष्ट करता है कि प्रगति केवल तब संभव है जब हम प्रकृति के साथ तालमेल बिठाकर चलें, न कि उसे चुनौती देकर।

'ककसाड़' की यह दशकीय यात्रा न केवल मील के पत्थर दर पत्थर स्थापित करने की कहानी है, बल्कि

यह उन विचारों के प्रसार की भी कहानी है, जो यह दर्शाते हैं कि हम कैसे एक शांतिपूर्ण और संतुलित जीवन जी सकते हैं। यह वह धरोहर है जिसे हम आने वाली पीढ़ियों को सौंप सकते हैं, ताकि वे जान सकें कि सही मायने में प्रगति का अर्थ क्या होता है।

आप जैसे सुधी पाठकों, हमारे अभिन्न रचनाकारों, शोध छात्रों और जनजातीय कलाकारों का सतत योगदान इस यात्रा में बहुत महत्त्वपूर्ण है। आपकी प्रतिक्रियाओं, सुझावों और पत्रिका को अब तक मिले आपके प्यार ने इस पत्रिका को सदैव जीवंत बनाए रखा है। हमें यकीन है कि आप आगे भी इस यात्रा में इसी तरह हमारे साथ बने रहेंगे और अनमोल जनजातीय ज्ञान के खजाने की धरोहर को आने वाली पीढ़ियों के लिए संरक्षित करने के अभियान में आपका सहयोग हमें मिलता रहेगा। जैसा कि प्रसिद्ध **अमेरिकी पर्यावरणविद् और लेखक, एल्डो लियोपोल्ड** ने कहा था—

"प्रकृति के साथ सामंजस्य बनाए रखने की हमारी क्षमता ही हमारी सभ्यता का अंतिम पैमाना होगी।"

ककसाड़ का उद्देश्य भी इसी दिशा में कार्य करना रहा है— जनजातीय समुदायों के जीवन-दर्शन को न केवल संरक्षित करना, बल्कि उसे मुख्यधारा में लाना और यह सुनिश्चित करना कि आधुनिकता के नाम पर यह ज्ञान कहीं खो न जाए। हम इस यात्रा में आपको हमारे साथ चाहते हैं, ताकि हम सभी मिलकर एक ऐसा भविष्य बना सकें जो प्रकृति के साथ मेलजोल और सहजीविता पर आधारित हो। जहाँ समानता का सरोकार हो और ऐसे जीवन मूल्य हों जहाँ सांस्कृतिक विविधता के लिए आदर हो। जनजातियों के ज्ञान और उनकी सबसे खराब विपदा में अपने मामले, अपने जीवन को प्रबंधित करने की आश्चर्यजनक क्षमता के प्रति आदर हो। जनजातियों के सामाजिक, सांस्कृतिक और लैंगिक पहलुओं के प्रति आदर हो। जनतंत्र और सहभागिता के अधिकार के प्रति आदर हो।

जनजातीय समाज की यह धरोहर, जो हमें सिखाती है कि कैसे जीना चाहिए, आज के युग में पहले से कहीं अधिक प्रासंगिक है। यह धरोहर हम सबकी है, और इसे संजोने की जिम्मेदारी भी हम सबकी है। इसलिए हम सब मिलकर इस अभियान को आगे बढ़ाने का संकल्प लेते हैं। किसी ने कहा है कि— अक्सर मनुष्य को जब समझ आती है, तब तक बहुत देर हो चुकी होती है। तब आदमी उसको भोगने के काबिल नहीं रहता। ऐसे में वह अपने चिमटे से सुख नहीं, उसकी राख उठाने आता है। अतः समय रहते हमें सजग हो जाना चाहिए।

इस सिलसिले में आप सबसे पहला काम यह कर सकते हैं कि ककसाड़ का यह अंक आपको कैसा लगा और आगामी अंक में हम और क्या बेहतर कर सकते हैं इसके बारे में अपने सुझाव आदि लिखकर हमें ईमेल, संदेश अथवा चिट्ठी जो भी आपके लिए सुविधाजनक हो हमें शीघ्र ही भेज दें। तो अब एक बार फिर बारी है आपकी। इसके साथ ही अगले अंक तक के लिए विदा।

आपका

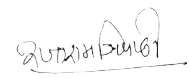

डॉ. राजाराम त्रिपाठी
मो. 94252-58105